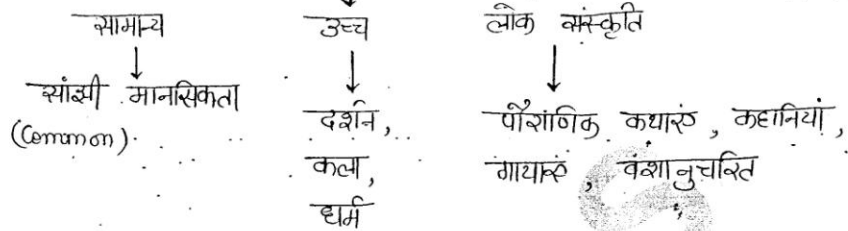


संस्कृति [Culture]

5/12/2017

शिव कल्प सहाय
धर्म दर्शन



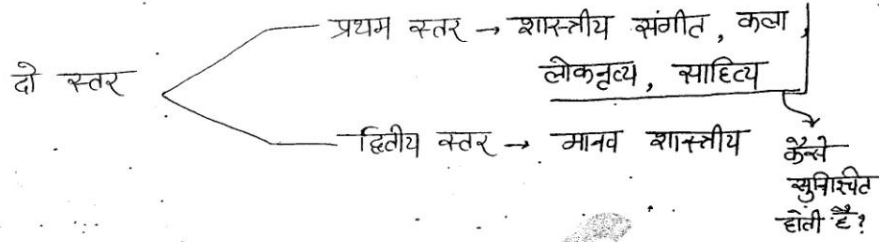
इतिहास लेखन में आरंभ में संस्कृति को कोई विशेष ध्यान नहीं मिला परंतु आज की छे बाद भारत में इतिहास लेखन की कुछ शाखाओं संस्कृति को अव्यक्ति आधार बनाकर निर्मित की गयी जिससे इतिहास एवं संस्कृति [1960-70 के दशक में] व्यक्तियुक्त रूप में हुई। यह शाखाओं थी - सब-आर्थन स्टडीज, स्थानीय इतिहास, मौखिक इतिहास, जेडर स्टडीज।

सब-आर्थन के तहत भारतीय इतिहासकारों ने उन वर्गों, समुदायों या क्षेत्रीय समूहों का इतिहास लिखना आरंभ किया जिनका भारतीय इतिहास के निर्माण में आद्यमूल्य योगदान तो था परंतु इतिहास लेखन में उनको कोई स्थान नहीं दिया गया था जैसे भारत की जनजातियाँ, ग्रामिक वर्ग, निम्न जातियाँ - - - आदि जबकि ये भारत की लोक-संस्कृतियों और लोक व्यवहारों को निरूपित करती थी। स्वाभाविक है कि जब इनका इतिहास लिखा गया तो उसके साथ-साथ लोक संस्कृतियों की इतिहास की परंपरा का हिस्सा बन गई।

भारत में देशजता (आधुनिक शब्दावली में स्थानीयता) का विशेष महत्व रहा है क्योंकि यह भारत की स्थानीय परंपराओं, संस्कारों, उत्पादन पद्धतियों और उसकों को छोटे-बड़े धर्मों में विभाजित कर भारत की संस्कृति की कड़ियों का निर्माण करती है। भारतीय इतिहासलेखन में ब्रिटिश पूर्व और ब्रिटिश पश्चात विभेद करके देखा तो ब्रिटिश पूर्व ये साम्राज्यों या समूहों तक सीमित रही और ब्रिटिश पश्चात यह बड़े राज्यों या मूल द्वारा के नायकों तक परंतु 1970 के दशक से स्थानीय इतिहासलेखन आरंभ हुआ जिससे भारत की स्थानीय संस्कृति का महत्व प्राप्त करने में सफल रही।

स्त्री समग्र भारतीय संस्कृति के ऊँटों में रही। यदि मानवशास्त्रीय अध्ययनों का विश्लेषण करें तो मानव विकास की परंपरा में स्त्री ही परिवार नाम की संस्था की संस्थापक बनी। यदि आध्यात्मिक दर्शनिक स्त्रियों पर गौर करें तो स्त्री ही सृष्टि की निर्मात्री थी अर्थात् समस्त संस्कारों, आचरणों और व्यवहारों का आदि स्रोत, फिर भी उसे इतिहास में स्थान नहीं मिला इसलिए जब ऊँट स्टेज पर इतिहास का महत्वपूर्ण विषय बना तो स्त्री की प्रतिष्ठा के साथ-साथ संस्कृति की प्रतिष्ठा भी सम्पन्न हुई।

संस्कृति की अवधारणा :-



प्रथम स्तर की संस्कृति की अवधारणा के केंद्र में या तो कोई कलाकार होता है, कोई विशेष कला होती है अथवा उसका संरक्षक। कहीं के नामों से यह कलाएं लंबे समय तक जब अपनी जीवंतता बनाये रखती हैं तो वे संस्कृति का हिस्सा बन जाती हैं।

मानव शास्त्रीय अध्ययनों के लिए संस्कृति का मतलब किसी समुदाय की संपूर्ण जीवन शैली से होता है जिसमें खानपान, पहनावा, धर्म, मनोरंजन, रीति-रिवाज, उत्सव और पर्व आदि शामिल होते हैं। इसमें केंद्र में कोई कलाकार नहीं होता बल्कि समुदाय की सांझी प्रवृत्तियाँ होती हैं, चाहे वे गौरवशाली हो या सौचनीय। जैसे- आध्यात्म, लोकसंगीत, कला गौरवशाली या जाति व्यवस्था में अस्पृश्यता सौचनीय

कुल मिलाकर संस्कृति कुछ तरफ़ क्लृप्त, विश्वास और आचरण, जोकि किसी समुदाय में व्यापक स्तर पर समझे और अपनाये गये हो, हैं। वहीं दूसरी तरफ़ संस्कृति शैतिक गतिविधियों में व्याप्त प्रगतिशीलता भी है जो वास्तुवाद, परिचान और आश्रय तथा विभिन्न प्रकार की बर्तन शैलियों में अभिव्यक्ति

पाती हैं।

प्र → संस्कृति एक अवधारणा नहीं बल्कि एक प्रवाह है जो युगों तक मानव समुदायों में विकसित होने वाली प्रवृत्तियों, आचरणों, व्यवहारों आदि को समाहित करे हुये है। क्या आप इससे सहमत हैं, लिखनी कीजिए।

प्र → संस्कृति मनुष्य और उसकी प्रवृत्तियों का प्रतिबिम्ब है जो बदलते युगों में उसकी विशेषताओं को निरूपित करता रहा है, चर्चा कीजिए।

→ संस्कृति —
अर्थव्यवस्था

सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ और आर्थिक इतिहास ↓

संस्कृति और आर्थिक व्यवस्था एक दूसरे को चक्रीय क्रिया में प्रभावित करते हैं। भारत की अर्थव्यवस्था और संस्कृति का अध्ययन करते समय इस संबंध को दरकिनारा नहीं किया जा सकता। उदाहरण के तौर पर जब यह कहा जाता है कि भारत की संस्कृति लगभग उसके 6.5 लाख गावों में बसती है तब इसका अर्थ यह होता है कि अग्नी श्रमी पद्धति पर उत्पादन की पद्धतियाँ आधुनिक वैज्ञानिक और पूँजीवादी ढंगों पर आधारित नहीं हैं बल्कि वे लोक संस्कृतियों के साथ-३ परंपरागत उत्पादन पद्धतियों द्वारा निर्देशित हैं। यही कारण है कि ग्रामीण गरीबी

का उत्सर्जीकरण न होकर लोक परंपरा में बंधू रहने का स्थान सुनिश्चित हो जाता है जो उनकी स्व-निवृत्तिमार्गी जीवनशैली का हिस्सा हो।

वैश्वीकरण के पश्चात भारतीय उत्पादन व्यवस्था सांस्कृतिक मूल्यों से नहीं बल्कि कुछ दूर तक पूंजीगत उद्देश्यों और बाजार के मूल्यों पर निर्भर होती जा रही है इसलिए भारत का सांस्कृतिक दायित्व संकुचित और सामाजिकता का विलोपन, रूढ़ता का विखंडन और गरीबी का उत्सर्जीकरण होना जाता है।

भारतीय संस्कृति में विविधता -

वैदिक → आर्य संस्कृति

जन → मानव समुदाय एवं उसकी संपत्ति

पशु (गी-176) + प्रकृति

ब्राह्मण ग्रंथ

कर्मकांडीयता यज्ञ
(मंत्र)

अन्यथा

संन्यास

उपनिषद्

(रहस्यवाद)

आगे चलकर इनका विरोध हुआ

नास्तिक - चावीक, बुद्ध, जैन (निग्रंथ)

विदेशी - आक, कुषाण, (मध्य एशिया से)

जीवनशैली में भिन्न

दैवत्व - ग्रीक, रोमन प्रभाव

भारत को दिया - पहनावा

रक्षा / युद्ध तकनीक

सूर्यकिरण / गांधार

great, little
tradition

- तुर्क आगमन → धर्म - इस्लाम

संस्कृति - इस्लाम के साथ - वं शहरी

सूफी कर्म का आगमन - इस्लामवाद

उपनिषद्

- मुगल

- वैश्वीकरण → Great Little Tradition
↓ ↓
गया के आइड ब्रह्मबंधन

विविधता में एकता 1

भारतीय संस्कृति के स्वरूप को समझने के लिए प्रत्यक्ष विविधताओं के नीचे छिपी उसकी एकता को पहचानना आवश्यक है। सामान्य तौर पर हम भारत को 'विविधता में एकता' के रूप में देखते आये हैं लेकिन यह पूछने की आवश्यकता है कि सभी भारतीय धर्म, भाषाओं, वर्गों आदि में की-कीन सा सूत्र है जो उन्हें आपस में बांधे हुए है।

आधुनिक विचारक मानते हैं कि भारतीय संविधान रचना इस स्तोत्र है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि एक संस्कार, एक प्रशासन, एक व्यवस्था या

एक संविधान होने के नाते हम एक हैं लेकिन ये व्यक्तियों तो ठपरी रकता का प्रदर्शन करती हैं न कि आवागमन रूपे सांस्कृतिक रकता का। एक शासन और एक कानून के आधार पर रकता का सुनिश्चित्य इसलिए भी उचित नहीं है क्योंकि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत को राजनैतिक रकता की सीमाओं तक सीमित कर देती है जबकि हमारी सांस्कृतिक विरासत की सीमाएं भारतीय उपमहाद्वीप और उससे परे पूर्वी एशिया तक जाती हैं।

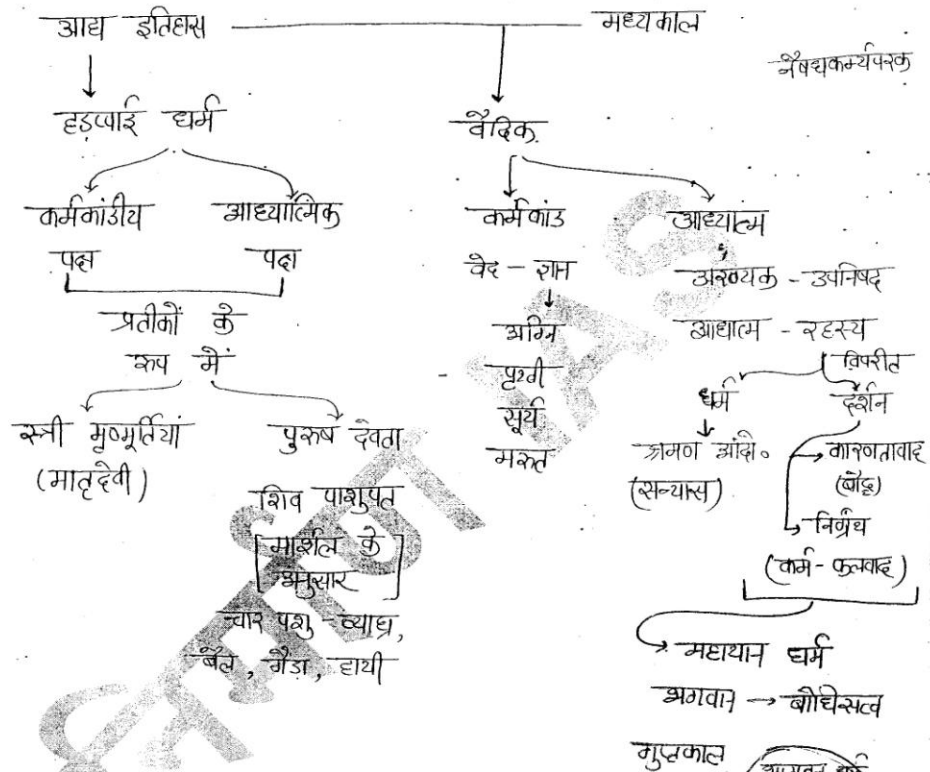
व्यख्या के दूसरे छोर पर, भारत की पटवम हमारी आध्यात्मिकता, बुजुर्गों के गुरुओं के प्रति हमारे सम्मान, अतिथियों के सत्कार, परंपराओं आदि में देखी जाती है। इसी प्रकार से हमारा धर्म, वंशों और सूफियों के उदार संदेश, समुक्त पश्चिमि जीवन के आदर्श, व्यक्ति के अधिक समुदायों (सामुदायिकता) को महत्व, स्थानीय हितों का समुदाय - - - - - आदि आदर्श की सांख्यिक संस्कृति के प्रतीक माने जाते हैं। भारत की ये विशेषताएं धर्म, भाषाओं और जातियों को लाघती हुई पूरे उपमहाद्वीप में संदेशों तक रकता का निर्माण करती रही जो आज भी कहीं इतिहास में, कहानियों में, गियों में संख्या भारतीय उपमहाद्वीप में व्याप्त हैं।

इस प्रकार हम भारत की सांस्कृतिक रकता को तीन रूपों में खोज सकते हैं- प्रथम, जीवन के आदर्शों के रूप में, द्वितीय सम्मान और सत्कार में और तृतीय एक सह-जातिव्य की भावना में।

⇒ भारत के लोकतंत्र की सफलता में हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं का कितना योगदान सुनिश्चित करती है? क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि प्रजातांत्रिक व्यवस्था का आधार हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं ही है?

भारतीय विचारकों में इस विषय को लेकर परस्पर विरोधाभास हैं। जहां एक तरफ डॉ. अंबेडकर एवं आंद्रे बिट्टे और राजनी कौठारी जैसे विचारक यह मानते हैं कि भारत में लोकतंत्र का पौधा अत्यंत परिष्कृत परिस्थितियों में लगाया गया जिस पर भारत के कुछ से वर्गों, सांस्कृतिक समुदायों और इतिहास में उपेक्षित रहे समूहों की पहचान पर निर्भर है। इसी तरह लडोल्फ वंपति और जवाहर लाल नेहरू जैसे समाजशास्त्री यह दावा करते हैं कि भारतीय प्रजातंत्र की सफलता हमारी सहज सांस्कृतिक तथा जाति आधारित प्रजातांत्रिक भागीदारी के कारण संभव हुई है।

धर्म



गान्ध की आधुनिक सभ्यताओं और संस्कृतियों जिन विभिन्न आध्यात्मों से निर्मित हुई थी उन्हें धर्म तथा आध्यात्म का तत्त्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण या इसलिये उन्हें विज्ञान की यांत्रिकी और पश्चिम की औद्योगिकी, दृष्टात्मकता का तत्त्व बेहद कमजोर या इसलिये वे संघर्ष की व्यापक अनुसंधान एवं समीक्षा पर अधिक आधारित रही। यद्यपि बीच-र में प्रतिष्ठित धार्मिक आध्यात्मिक परंपराओं के विकास प्रतिक्रियाएँ हुई (जैसे- सैन्धवों के विकसित वैदिक जनो की और वैदिक सभ्यताओं तथा प्रतिस्पर्धियों के विकसित नास्तिकों)।

इसके विपरीत यूरोपीय सभ्यताओं व
आसकृतिक प्रतिष्ठाओं में तर्क, विज्ञान और औन्नतता
का पक्ष अधिक प्रभावशाली रहा इसलिए वहां सम्यक्
परिवर्तन के साथ-२ तर्कों, - अन्वेषणों या वैज्ञानिक
अन्वेषणों की नयी कड़ियां जुड़ी चली गयी जो
पहले की प्रतिष्ठाओं को खीनार नहीं करती थी
और जब इनके साथ औन्नतता के पक्ष जुड़े तो
इसमें वैचारिक संघर्ष के साथ-२ वर्ग-संघर्ष के
पक्ष भी जुड़ गये थे इसलिए वहां यूरोप का स्वयं
और नये जातिविमर्श की परंपरा विकसित हुई।

द्वितीय

- मूर्ति पूजा — स्त्री, पुरुष
 - प्रकृति पूजा —
 - वृक्ष } जीवित (पौराणिक)
 - पशु } वास्तविक / व्यवहारिक
 - मंदिर का प्रमाण — नदी मिले
- सम्पन्न, अक्षय के तत्व विद्यमान हैं

वैदिक धर्म १

वैदिक धर्म का तात्पर्य उस धर्म से है जो वैदिक संहिताओं में विभिन्न प्रकार से अभिव्यक्ति पाता है।

ज्ञान की व्यक्त करने का माध्यम - (i) कविता / पद्य - ऋग्वेद
(ii) गद्य - यजुर्वेद
(iii) छन्द / गीत - सामवेद

ज्ञान किसका → आकाश, पृथ्वी, ^(अक्षर) वरुण, सूर्य, मित्र, ^(अग्नि) अदिति, साविता, अग्नि, इंद्र, नासत्य - - - -

प्रकाश के दो रूप → व्यक्त और अव्यक्त

इस प्रकार से वैदिक धर्म में मुख्य: नि.हि. विशेषताएं प्रकट होती हैं -

प्रथम - वैदिक धर्म ज्ञानात्मक है,

द्वितीय → वैदिक धर्म के मुख्य आधार तीन वेद (अथवा संहिताएं) हैं जिन्हें वैदिकी कहा जाता है,

तृतीय → इस धर्म में पुरोहित व्यक्तियों का विशेष महत्व है

लेकिन आरंभ में पुरोहित एक आचार्य अथवा सदैवज्ञ के स्वरूप में प्रतिष्ठित स्वीकृत है न कि कर्मकाण्डिय समा के रूप में।

चतुर्थ - वैदिक धर्म का अभिप्राय वैदिक देवताओं को जानना, उनकी स्तुति करना, उनके कार्यों एवं गतियों का अनुमान करना तथा वैदिक जनों के जीवन में उनकी महत्ता की प्रतिष्ठा करना।

जानने के लिए ? - मानवीकरण

↓
सूर्यपूजा

कार्य / गति

उन्हे कार्य जानने के
अनुकूल कैसे - २ स्वरों
के जीवन से जोड़ने लगे

↓
अहित से बचने
↓
पूत

इन्हीं यज्ञों की ← यैसीय व्यक्त्या
वैदिक जीवन और चार पुत्रोदित - ३ + ब्रह्मा
उपलब्धियों से जोड़ दिया गया

रश्मसूय यज्ञ
अश्वमेध "
पुरुषमेध "
वामपेय "

आद्यात्मिका के साथ
राजनीति का समागम

प्र- वैदिक धर्म की प्रगति, परिवर्तन और प्रकृति के कारणों का
परीक्षण करते हुए क्या आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं
कि हमने जिस सांस्कृतिक व्यवस्था की बुनियाद रखी थी
वह आज तक - भारत में विभिन्न स्वरूपों में मौजूद है।

प्र- वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता प्रमाणित है, भारत के सांस्कृतिक
जीवन के संदर्भ में, उपर्युक्त कथन का परीक्षण कीजिए।